मार्कण्डेयपुराण में वर्णित विष्णु की माया स्वरूपा प्रकृति का वर्णन

डॉ. प्रतिभा मिश्रा

मार्कण्डेयपुराण में वेदान्त, योग एवं सांख्य दर्शन अपने पूर्ण वैभव के साथ वर्णित हैं। इनका क्रमशः वर्णन इस पुराण में एक विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया है। इस पुराण के अनुसार इन तीनों के ज्ञान से ही मुक्ति सम्भव है। इसमें वेदान्त के द्वारा ''ब्रह्म'' व ''जीव'' का प्रतिपादन किया गया है, लेकिन अन्तः करण के निर्मल एवं शान्त होने पर ही ब्रह्म का प्रतिबिम्ब स्पष्ट एवं स्थिर हो सकता है। अतः चित्त की स्थिरता के लिए योग का उपदेश किया गया है। योग चित्त की चंचलता का निरोधक है। तत्पश्चात् सांख्य द्वारा प्रकृति–पुरूष विवेक–ज्ञान जो मोक्षस्वरूप है, का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार मार्कण्डेयपुराण में जो तीन दर्शनों के समन्वय का प्रयास किया गया है, वह अद्भुत है एवं दुलर्भ है।